National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multinationaljournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 05-06-2026, Accepted: 05-07-2026, Published: 20-07-2026
Volume 11, Issue 3, 2026, Page No. 28-32

हिंद–प्रशांत में चीन की आक्रामकता और भारत की प्रतिक्रिया: एक समसामयिक विश्लेषण

अंशुमान सिंह[1], डॉ. नीरज कुमार[2]
[1] शोधार्थी, राजनीति–विज्ञान विभाग, श्रीवेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशक, राजनीति–विज्ञान विभाग, श्रीवेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य आक्रामकता, दक्षिण चीन सागर में अवैध दावे, 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ ने क्षेत्रीय सुरक्षा को गंभीर रूप से चुनौती दी है। इस पृष्ठभूमि में, भारत की प्रतिक्रिया केवल सैन्य स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि उसने कूटनीतिक, आर्थिक और बहुपक्षीय मोर्चों पर एक समग्र रणनीति अपनाई है। प्रस्तुत समीक्षा लेख रक्षात्मक यथार्थवाद के सैद्धांतिक ढाँचे पर आधारित है और 2020 के गलवान संकट से लेकर वर्तमान तक भारत–चीन संबंधों का समसामयिक विश्लेषण करता है। शोध यह स्थापित करता है कि भारत ने QUAD, 'एक्ट ईस्ट' नीति, 'नेकलेस ऑफ डायमंड्स' रणनीति और SAGAR जैसे बहुआयामी उपकरणों के माध्यम से चीन की आक्रामकता का प्रभावी ढंग से सामना किया है, साथ ही रणनीतिक स्वायत्तता को भी सुरक्षित रखा है।

मूल शब्द: हिंद–प्रशांत, चीन की आक्रामकता, स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स, गलवान, भारत की प्रतिक्रिया, QUAD, रक्षात्मक यथार्थवाद, रणनीतिक स्वायत्तता, BRI, नेकलेस ऑफ डायमंड्स

जब भी कोई उभरती हुई शक्ति किसी स्थापित व्यवस्था को चुनौती देती है, तो इतिहास साक्षी रहा है कि तनाव अपरिहार्य हो जाता है। आज हिंद–प्रशांत क्षेत्र में यही घटित हो रहा है। एक ओर चीन, जो अपने आर्थिक और सैन्य उभार के साथ क्षेत्रीय प्रभुत्व स्थापित करने की होड़ में है; दूसरी ओर भारत, जो अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए इस चुनौती का सामना कर रहा है। यह केवल दो देशों का द्वंद्व नहीं है— यह 21वीं सदी की वैश्विक शक्ति–संरचना का निर्धारण है।

Aryal और Nair (2025) के अनुसार, हिंद–प्रशांत क्षेत्र विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 60 प्रतिशत उत्पन्न करता है और यहाँ वैश्विक जनसंख्या का 60 प्रतिशत निवास करता है। मलक्का जलडमरूमध्य से लगभग 25 प्रतिशत वैश्विक व्यापार गुजरता है। ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता ने न केवल भारत, बल्कि अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया को भी गहरी चिंता में डाल दिया है।

चीन की आक्रामकता के तीन प्रमुख मोर्चे हैं: प्रथम, दक्षिण चीन सागर में नौ–डैश लाइन के दावे और कृत्रिम द्वीपों का निर्माण; द्वितीय, 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' के माध्यम से भारत को घेरने की रणनीति; और तृतीय, वास्तविक नियंत्रण रेखा पर बार–बार की जाने वाली घुसपैठ, जो 2020 में गलवान घाटी संघर्ष के रूप में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची (Verma, 2024)। इन सबका सामना करते हुए भारत ने एक बहुआयामी और संतुलित रणनीति विकसित की है, जिसका विश्लेषण इस लेख का मूल उद्देश्य है।

यह शोध पत्र चार मुख्य प्रश्नों का उत्तर खोजता है: क्या हैं चीन की आक्रामकता के समसामयिक आयाम? किस प्रकार 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति भारत की सुरक्षा को प्रभावित करती है? 2020 के गलवान संकट के बाद भारत–चीन संबंध किस दिशा में गए हैं? और भारत ने इन चुनौतियों के जवाब में कौन–सी रणनीतियाँ अपनाई हैं?

सैद्धांतिक ढाँचा: रक्षात्मक यथार्थवाद

किसी भी जटिल भू–राजनीतिक परिस्थिति को समझने के लिए एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार आवश्यक होता है। इस शोध में रक्षात्मक यथार्थवाद (Defensive Realism) को प्राथमिक सैद्धांतिक ढाँचे के रूप में अपनाया गया है। यह सिद्धांत वाल्ट्ज की संरचनात्मक यथार्थवाद की परंपरा से उद्भूत है, परंतु यह आक्रामक विस्तारवाद के बजाय सुरक्षा–अधिकतमीकरण पर बल देता है।

Aryal और Nair (2025) के अनुसार, रक्षात्मक यथार्थवाद यह मानता है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की अराजक प्रकृति में राष्ट्र अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को सुरक्षित रखने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। राष्ट्र मूलतः जोखिम–विरोधी होते हैं और ऐसी रणनीतियाँ अपनाते हैं जो सुरक्षा को सुनिश्चित करें, परंतु अनावश्यक उकसावे से बचें। हिंद–प्रशांत में यही तर्क भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के व्यवहार को समझाता है।

भारत के संदर्भ में, यह सिद्धांत विशेष रूप से प्रासंगिक है। भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' की परंपरा, जो उसे किसी भी शक्ति–गुट में पूर्णतः समाहित होने से रोकती है, रक्षात्मक यथार्थवाद का व्यावहारिक प्रकटीकरण है। Verma (2024) यह भी स्पष्ट करते हैं कि भारत की बढ़ती सैन्य क्षमताएँ और रणनीतिक साझेदारियाँ आक्रमण के लिए नहीं, बल्कि चीन की आक्रामकता को रोकने के लिए हैं— और यही रक्षात्मक यथार्थवाद का मूल है।

इस सैद्धांतिक ढाँचे के साथ, इस लेख में भू–राजनीति के मैकिंडर–स्पाइकमैन मॉडल को भी आधार बनाया गया है। Banik (2025) के अनुसार, चीन एक साथ मैहान के समुद्री शक्ति सिद्धांत और मैकिंडर के हार्टलैंड सिद्धांत को क्रियान्वित कर रहा है— एक ओर हिंद महासागर में समुद्री शक्ति बढ़ा रहा है, दूसरी ओर मध्य एशिया के माध्यम से महाद्वीपीय वर्चस्व स्थापित कर रहा है।

हिंद–प्रशांत में चीन की आक्रामकता: एक बहुआयामी विश्लेषण

1. दक्षिण चीन सागर: संप्रभुता का प्रश्न

दक्षिण चीन सागर केवल एक समुद्री क्षेत्र नहीं है— यह वैश्विक व्यापार की जीवनरेखा है। Tertia और Perwita (n.d.) के अनुसार, 2016 में इस क्षेत्र से 3.37 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का व्यापार गुजरा था। चीन ने अपनी नौ–डैश लाइन के माध्यम से इस विशाल क्षेत्र पर दावा किया है, जो फिलीपींस, वियतनाम,

मलेशिया और इंडोनेशिया के अनन्य आर्थिक क्षेत्रों में घुसपैठ करती है।

Chauhan और Agnihotri (2024) विस्तार से बताते हैं कि चीन ने 2013 से लेकर अब तक दक्षिण चीन सागर में लगभग 3,200 एकड़ कृत्रिम भूमि का निर्माण किया है। इन कृत्रिम द्वीपों पर सैन्य प्रतिष्ठानों, हवाई पट्टियों और मिसाइल प्रणालियों को स्थापित किया गया है। यह केवल क्षेत्रीय विस्तार नहीं है, बल्कि 'ग्रे जोन ऑपरेशन' का एक व्यवस्थित उपयोग है, जिसके माध्यम से चीन धीरे–धीरे नए 'सामान्य' स्थापित कर रहा है।

2016 में अंतर्राष्ट्रीय पंचाट ने फिलीपींस के पक्ष में फैसला सुनाया और चीन के दावों को निराधार घोषित किया। परंतु चीन ने इस निर्णय को सिरे से अस्वीकार कर दिया। Chauhan और Agnihotri (2024) की पुस्तक में Sangtam और Hoang के अध्याय में यह रेखांकित किया गया है कि फिलीपींस और वियतनाम को चीनी तटरक्षक नावों और मछुआरों की नौकाओं से लगातार उकसाया जा रहा है। यह ग्रे जोन रणनीति पारंपरिक युद्ध से भी अधिक खतरनाक है, क्योंकि यह प्रतिक्रिया की स्पष्ट सीमा नहीं देती।

2. ताइवान जलडमरूमध्य: एक वैश्विक चिंता

ताइवान का प्रश्न केवल चीन और ताइवान के बीच का विवाद नहीं है— यह वैश्विक व्यवस्था के भविष्य का प्रश्न है। Chauhan और Agnihotri (2024) की पुस्तक में यह विस्तार से विश्लेषित किया गया है कि चीन ने 1993 की अपनी श्वेत पत्र की सौम्य भाषा को 2022 तक बदलकर एक स्पष्ट और आक्रामक रुख अपना लिया है। 2022 की श्वेत पत्र में 'ताइवान चीन का हिस्सा है— यह एक अखंडनीय तथ्य है' जैसी भाषा का प्रयोग किया गया।

Captain Kamlesh K. Agnihotri (Chauhan & Agnihotri, 2024) के अनुसार, मई 2024 में ताइवान के राष्ट्रपति के शपथ–ग्रहण के ठीक बाद चीन ने अभूतपूर्व पैमाने पर नौसैनिक और तटरक्षक अभ्यास किया। PLA वायुसेना के विमान ताइवान की ADIZ का उल्लंघन करते हुए माध्यिका रेखा पार कर रहे हैं— यह 1950 के दशक के बाद सबसे अधिक आक्रामक व्यवहार है। भारत के लिए यह चिंताजनक है क्योंकि एक चीन–ताइवान संघर्ष की स्थिति में हिंद–प्रशांत के समुद्री मार्ग, जिन पर भारत का 90 प्रतिशत व्यापार निर्भर है, प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होंगे।

3. पूर्वी चीन सागर और जापान–चीन तनाव

Tertia और Perwita (n-d.) के विश्लेषण के अनुसार, पूर्वी चीन सागर में सेनकाकू/दियाओयू द्वीपों को लेकर चीन और जापान का विवाद लगातार तीव्र हो रहा है। 2013 में चीन ने इस क्षेत्र में वायु रक्षा पहचान क्षेत्र (ADIZ) घोषित किया। 2016 में जापान ने 664 बार चीनी विमानों को रोका, जो शीत युद्ध के बाद सर्वाधिक है। Aryal और Nair (2025) के अनुसार, इस क्षेत्र में चीन का यह व्यवहार रक्षात्मक यथार्थवाद के विपरीत एक आक्रामक विस्तारवादी रणनीति है, जो क्षेत्रीय स्थिरता के लिए गंभीर खतरा है।

'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स': भारत को घेरने की चीनी रणनीति

1. रणनीति का परिचय और उद्देश्य

कल्पना कीजिए कि आपके घर के चारों ओर धीरे–धीरे एक घेरा बनाया जा रहा है — बिना किसी युद्ध के, बिना किसी स्पष्ट घोषणा के। यही है चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति। Banik (2025) के अनुसार, यह पद सर्वप्रथम 2005 में अमेरिकी परामर्श फर्म ठवव्र Allen Hamilton द्वारा प्रयुक्त किया गया था। इसके अंतर्गत चीन हिंद महासागर के तटीय देशों में बंदरगाहों, नौसैनिक ठिकानों और बुनियादी ढाँचे में निवेश के माध्यम से एक रणनीतिक नेटवर्क स्थापित कर रहा है।

इस रणनीति के दो प्रमुख उद्देश्य हैं। प्रथम, चीन की 'मलक्का दुविधा' का समाधान — मलक्का जलडमरूमध्य के माध्यम से प्रतिदिन 40 लाख बैरल तेल परिवहन करने वाले चीन को भय है कि अमेरिका इस जलमार्ग को बाधित कर सकता है। द्वितीय, भारत को उसके अपने क्षेत्र में ही घेरकर उसके प्रभाव को सीमित करना। Banik (2025) यह भी बताते हैं कि चीन के पास 370 जलपोतों की नौसेना है, जो 2030 तक 435 तक पहुँचने की संभावना है, जबकि भारत के पास मात्र 132 युद्धपोत हैं।

2. प्रमुख 'मोती' और उनका भारत पर प्रभाव

ग्वादर, पाकिस्तान — यह 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' का सबसे चमकीला मोती है। Banik (2025) के विस्तृत विश्लेषण के अनुसार, ग्वादर हॉर्मुज जलडमरूमध्य से मात्र 400 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है कृ वही जलडमरूमध्य जिससे भारत का 85 प्रतिशत से अधिक ऊर्जा आयात गुजरता है। 2015 में पाकिस्तान ने इस बंदरगाह को 40 वर्षों के लिए चीनी कंपनी को पट्टे पर दे दिया। ग्वादर केवल एक व्यापारिक बंदरगाह नहीं है— यहाँ एक सैन्य गैरिसन, मिसाइल रक्षा इकाई और एक प्रमुख रिफाइनरी भी स्थापित की जा रही है। भारतीय नौसेनाध्यक्ष के अनुसार, ग्वादर भारत की अरब सागर में गतिविधियों की निगरानी के लिए एक महत्वपूर्ण अवलोकन केंद्र बन सकता है।

हंबनटोटा, श्रीलंका— यह बंदरगाह भारत के दक्षिणी तट से मात्र 30 नॉटिकल मील की दूरी पर है। Banik (2025) बताते हैं कि चीन ने यहाँ 1.5 अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश किया और जब श्रीलंका ऋण नहीं चुका सका, तो 2017 में चीन को 70 प्रतिशत हिस्सेदारी और 99 वर्षों की पट्टे की अवधि मिल गई। यह 'ऋण जाल कूटनीति' का सबसे चर्चित उदाहरण है। भारत के लिए यह विशेष रूप से चिंताजनक है क्योंकि यह बंदरगाह विशाखापट्टनम और अंडमान–निकोबार के भारतीय नौसैनिक प्रतिष्ठानों के निकट है।

क्याउक्फ्यू, म्यांमार — Banik (2025) के अनुसार, यह 7.3 अरब डॉलर का बंदरगाह भारत के निर्माणाधीन नौसैनिक अड्डे INS वर्षा के निकट है। यदि यह पूर्ण हो जाए, तो चीन को युन्नान प्रांत तक सीधी समुद्री पहुँच मिल जाएगी, जिससे उसकी मलक्का दुविधा कम होगी। मालदीव में चीन की हालिया गतिविधियाँ भी उल्लेखनीय हैं — 2024 में चीन और मालदीव के बीच दो रक्षा समझौते हुए, जिनसे भारत की पारंपरिक प्रभाव क्षेत्र में चीन की उपस्थिति बढ़ी है।

गलवान संकट 2020: एक जलविभाजक घटना

1. संकट की पृष्ठभूमि और कारण

जून 2020 की वह रात, जब गलवान घाटी में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच हाथापाई हुई, हिंद–प्रशांत के भू–राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गई। Verma (2024) के गहन विश्लेषण के अनुसार, मई 2020 में चीन ने एक साथ कई स्थानों पर घुसपैठ की— पैंगोंग त्सो का उत्तरी किनारा, गलवान नदी घाटी, गोगरा–हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र और देपसांग मैदान। यह एक सुनियोजित, बहुआयामी सैन्य दाँव था।

Verma (2024) इस घुसपैठ के लिए कई कारण गिनाते हैं। प्रथम कारण था दरबुक–'योक–DBO सड़क का निर्माण, जिसने अक्साई चिन तक भारत की सैन्य पहुँच को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया। द्वितीय कारण था अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद गृहमंत्री अमित शाह का वह बयान, जिसमें उन्होंने अक्साई चिन की पुनर्प्राप्ति का उल्लेख किया था। बीजिंग ने इन दोनों को मिलाकर यह निष्कर्ष निकाला कि भारत अधिक जोखिम लेने वाला और आक्रामक हो गया है।

एक विद्वान की 'सैलामी स्लाइसिंग' की अवधारणा भी उल्लेखनीय है— Verma (2024) के अनुसार, चीन छोटे–छोटे अतिक्रमण करके एक ऐसी स्थिति बना देता है, जहाँ प्रतिपक्ष के सामने दो ही विकल्प बचते हैं: या तो अतिक्रमण स्वीकार करो या युद्ध करो। यह रणनीति भारत के साथ सात दशकों से आजमाई जा रही है।

2. COVID–19 और चीन की रणनीतिक गणना

2020 में जब पूरी दुनिया COVID–19 महामारी से जूझ रही थी, उसी समय चीन ने LAC पर आक्रामकता बढ़ाई। Verma (2024) के अनुसार, COVID–19 के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन की छवि को गंभीर नुकसान हुआ था। इस आलोचना को 'चीन के उभार को नियंत्रित करने का प्रयास' मानकर बीजिंग ने यह संदेश देना चाहा कि COVID–19 उसकी क्षमताओं को कम नहीं कर सकती। भारत पर दबाव बनाकर चीन ने यह भी स्थापित करने का प्रयास किया कि शक्ति असंतुलन के कारण भारत को उसकी आक्रामकता के सामने झुकना ही होगा— परंतु यह गणना पूरी तरह गलत साबित हुई।

Verma (2024) यह भी उजागर करते हैं कि भारत–अमेरिका के बढ़ते रणनीतिक संबंध, विशेषकर 2017 के डोकलाम गतिरोध के बाद, बीजिंग की बेचैनी का एक महत्वपूर्ण कारण रहे। चीन ने 2020 की घुसपैठ के माध्यम से भारत को यह संकेत देने का प्रयास किया कि वाशिंगटन के साथ निकटता की एक सीमा है।

3. गलवान के बाद भारत–चीन संबंध

गलवान संघर्ष ने भारत–चीन संबंधों में एक मौलिक परिवर्तन ला दिया। Aryal और Nair (2025) के अनुसार, 2020 के बाद भारत में 'चीन विरोधी' भावना तेजी से बढ़ी और इसका सीधा प्रभाव नीतिगत बदलावों पर पड़ा। भारत ने 200 से अधिक चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगाए, चीनी कंपनियों के लिए FDI नियमों को कड़ा किया और सरकारी खरीद में चीनी उत्पादों को हाशिए पर धकेला। यह आर्थिक प्रतिक्रिया भारत की बदलती रणनीतिक सोच का परिचायक है।

Verma (2024) आगे चेतावनी देते हैं कि LAC पर सुरक्षा स्थिति गलवान के बाद और भी नाजुक हो गई है। दोनों देश आधुनिक सैन्य प्लेटफॉर्म तैनात कर रहे हैं और ब्रिंकमैनशिप रणनीतियाँ अपना रहे हैं, जिससे आकस्मिक संघर्ष का खतरा बढ़ गया है। नेताओं के स्तर पर गंभीर द्विपक्षीय वार्ता का अभाव इस स्थिति को और जटिल बना देता है।

भारत की प्रतिक्रिया रणनीतियाँ

1. QUAD: एक बहुपक्षीय सुरक्षा ढाँचा

QUAD को अक्सर एशियाई NATO कहकर आलोचित किया जाता है, परंतु यह पूर्णतः सटीक नहीं है। Aryal और Nair (2025) के अनुसार, QUAD एक विधिक संधि–बद्ध गठबंधन नहीं है कृ यह मूलतः साझा मूल्यों और हितों पर आधारित एक लचीला सुरक्षा संवाद है। Singh *et al.* (2025) के शोध के अनुसार, भारत का QUAD में शामिल होना एक रणनीतिक आवश्यकता बन गई है, क्योंकि अकेले कोई भी देश — यहाँ तक कि अमेरिका भी — चीन के प्रभाव को संतुलित नहीं कर सकता।

Banik (2025) इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात कहते हैं कि भारत SAGAR अवधारणा और IPOI के उद्देश्यों को QUAD के साथ संरेखित करने का प्रयास कर रहा है। 2021 में QUAD का पहला नेता–स्तरीय शिखर सम्मेलन हुआ, जिसमें COVID–19 वैक्सीन वितरण, जलवायु परिवर्तन और समुद्री सुरक्षा पर सहयोग पर चर्चा हुई। यह QUAD की परिपक्वता और उसके विस्तारित एजेंडे का प्रमाण है।

2. 'नेकलेस ऑफ डायमंड्स': भारत की जवाबी रणनीति

जिस प्रकार चीन 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' से भारत को घेरने का प्रयास कर रहा है, उसी प्रकार भारत 'नेकलेस ऑफ डायमंड्स' रणनीति से चीन को जवाब दे रहा है। Banik (2025) के अनुसार, यह पद भारत के पूर्व विदेश सचिव ललित मानसिंह ने 2011 में प्रयुक्त किया था। इस रणनीति के तहत भारत ने सिंगापुर के चांगी नौसैनिक अड्डे, इंडोनेशिया के साबांग बंदरगाह, ईरान के चाबहार और ओमान के डुकम बंदरगाह तक पहुँच प्राप्त की है।

Banik (2025) यह भी बताते हैं कि 2019 में भारतीय नौसेना ने अंडमान–निकोबार द्वीपों में 56.5 अरब रुपये का सैन्य बुनियादी ढाँचा विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया — मलक्का जलडमरूमध्य के पास यह स्थान चीन के लिए एक रणनीतिक प्रतिरोध का काम करेगा। सेशल्स में अगालेगा द्वीप को सैन्य उद्देश्यों के लिए विकसित करना और मॉरीशस के साथ रक्षा समझौता भी इसी नेटवर्क का हिस्सा है।

3. 'एक्ट ईस्ट' नीति और आसियान जुड़ाव

'एक्ट ईस्ट' नीति भारत की सबसे प्रभावी दीर्घकालिक प्रतिक्रिया रणनीतियों में से एक है। Koga (2026) के अनुसार, ASEAN के साथ भारत की Comprehensive Strategic Partnership (2022) न केवल आर्थिक सहयोग बल्कि राजनीतिक–सुरक्षा समन्वय का भी आधार है। Banik (2025) बताते हैं कि 2014 में प्रधानमंत्री मोदी ने इस नीति को और तीव्र किया, जिसमें समुद्री सुरक्षा घटक को सम्मिलित किया गया।

Chauhan और Agnihotri (2024) की पुस्तक में Hai और Sangtam के अध्याय में भारत–वियतनाम समुद्री संयोजकता का विस्तृत विश्लेषण है। भारत ने वियतनाम को रक्षा उपकरण प्रदान किए हैं और दक्षिण चीन सागर में MILAN नौसैनिक अभ्यास के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। यह प्रत्यक्षतः चीन का सामना किए बिना उसके प्रभाव को संतुलित करने की सूक्ष्म कूटनीति है।

4. SAGAR, Project Mausam और INSTC

भारत की प्रतिक्रिया केवल सैन्य नहीं है— यह सांस्कृतिक, आर्थिक और सभ्यतागत भी है। Banik (2025) के अनुसार, SAGAR (Security and Growth for All in the Region) सिद्धांत भारत को हिंद महासागर क्षेत्र में एक सौम्य नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करता है। यह सिद्धांत यह स्थापित करता है कि भारत की अपनी सुरक्षा और समृद्धि क्षेत्र की समग्र सुरक्षा और समृद्धि से अभिन्न रूप से जुड़ी है।

Project Mausam चीन की Maritime Silk Road का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जवाब है। Banik (2025) बताते हैं कि 2014 में दोहा में विश्व धरोहर समिति की बैठक में प्रारंभ इस परियोजना के माध्यम से भारत हिंद महासागर क्षेत्र के 39 देशों के साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संपर्कों को पुनर्जीवित कर रहा है। चाबहार के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) ग्वादर का एक व्यावहारिक विकल्प है— मई 2016 में भारत ने चाबहार के विकास के लिए 500 मिलियन डॉलर आवंटित किए।

हिंद–प्रशांत रणनीति में विभाजन: एक आलोचनात्मक दृष्टि

हिंद–प्रशांत रणनीति की एक सीमा यह भी है कि इसके प्रमुख भागीदार एकमत नहीं हैं। Aryal और Nair (2025) ने इस विभाजन का गहन विश्लेषण किया है। अमेरिका खुले तौर पर चीन–विरोधी भाषा का प्रयोग करता है— उसकी 2022 की इंडो–पैसिफिक रणनीति में चीन को 'स्वतंत्र और दमनकारी विश्व व्यवस्था' के बीच प्रतिस्पर्धा का केंद्र बताया गया है।

इसके विपरीत, जापान की 'फ्री एंड ओपन इंडो–पैसिफिक' (FOIP) रणनीति में चीन का नाम नहीं लिया जाता और इसे BRI का विकल्प नहीं बताया जाता। Aryal और Nair (2025) बताते हैं कि जापान इसे एक समावेशी मंच के रूप में प्रस्तुत करता है। ऑस्ट्रेलिया एक सूक्ष्म स्थिति में है— वह अमेरिका का सहयोगी है, परंतु चीन उसके कुल निर्यात का 30 प्रतिशत से अधिक खरीदता है।

भारत की स्थिति सबसे जटिल और सबसे दिलचस्प है। Aryal और Nair (2025) के अनुसार, भारत ने स्पष्ट रूप से कहा है कि 'इंडो–पैसिफिक रणनीति किसी एक देश को सीमित करने की नहीं है।' चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, और भारत का व्यापार घाटा 2023–24 में 85 अरब डॉलर के ऐतिहासिक उच्चतम स्तर पर पहुँच गया। ऐसे में भारत के लिए चीन का पूर्ण आर्थिक विच्छेद न व्यावहारिक है, न वांछनीय। इस विरोधाभास में ही भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' की असली परीक्षा है।

चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा

भारत की प्रतिक्रिया रणनीतियाँ निश्चित रूप से प्रभावशाली हैं, परंतु कुछ मूलभूत चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें नकारा नहीं जा सकता। सबसे बड़ी चुनौती शक्ति असंतुलन की है। Banik (2025) के अनुसार, चीन की अर्थव्यवस्था भारत की अर्थव्यवस्था से लगभग पाँच गुना बड़ी है और उसका रक्षा बजट भारत से लगभग चार गुना अधिक है (Verma, 2024)। यह असमानता भारत की बार्गेनिंग क्षमता को सीमित करती है।

दूसरी चुनौती यह है कि QUAD की चारों सदस्य शक्तियाँ चीन के प्रति एक समान दृष्टिकोण नहीं रखतीं (Aryal – Nair, 2025)। यह रणनीतिक विभाजन QUAD की सामूहिक प्रभावशीलता को कम करता है। तीसरी चुनौती घरेलू है — भारत की रक्षा औद्योगिक आत्मनिर्भरता अभी भी सीमित है और देश का बुनियादी ढाँचा विकास चीन की तुलना में काफी पीछे है।

Chauhan और Agnihotri (2024) की पुस्तक में Captain Vikramaditya के अध्याय में भारत के लिए दक्षिण चीन सागर से सीख का विश्लेषण किया गया है। भारत को अपनी लंबी तटरेखा, द्वीप क्षेत्रों और समुद्री सीमाओं की सुरक्षा के लिए एक व्यापक और एकीकृत समुद्री रणनीति विकसित करनी होगी। अंडमान–निकोबार और लक्षद्वीप द्वीपसमूह का रणनीतिक विकास इस दिशा में एक अनिवार्य कदम है।

Banik (2025) एक विचारोत्तेजक सुझाव देते हैं — भारत को Thucydides Trap से बचने के लिए BRI के कुछ घटकों में सीमित भागीदारी पर विचार करना चाहिए। यदि BRI में भारत की उपस्थिति होगी, तो वह अंदर से परियोजनाओं को आकार दे सकेगा और अपनी चिंताओं को प्रभावी ढंग से उठा सकेगा। परंतु यह सुझाव विवादास्पद है और भारत की वर्तमान नीतिगत सोच के विपरीत है।

निष्कर्ष

इस समीक्षा लेख से यह स्पष्ट होता है कि हिंद–प्रशांत में चीन की आक्रामकता और भारत की प्रतिक्रिया — दोनों ही बहुआयामी और जटिल हैं। चीन की आक्रामकता दक्षिण चीन सागर में कृत्रिम द्वीप निर्माण से लेकर, ताइवान जलडमरूमध्य में सैन्य अभ्यास, 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' के माध्यम से भारत को घेरने की कोशिश और LAC पर बार–बार की घुसपैठ तक फैली हुई है।

भारत ने इन चुनौतियों का सामना करते हुए एक संतुलित, बहुआयामी रणनीति अपनाई है। QUAD में सक्रिय भागीदारी, 'नेकलेस ऑफ डायमंड्स' के माध्यम से रणनीतिक बंदरगाहों तक पहुँच, 'एक्ट ईस्ट' नीति द्वारा आसियान से जुड़ाव, SAGAR सिद्धांत और Project Mausam जैसी सांस्कृतिक पहल — ये सभी मिलकर भारत की समग्र प्रतिक्रिया को परिभाषित करते हैं। परंतु शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत ने अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' को बनाए रखते हुए यह सब किया है। वह न तो पूरी तरह अमेरिकी कक्षा में समा गया है और न ही चीन के साथ टकराव को अपरिहार्य मान लिया है। Verma (2024) के शब्दों में, भारत और चीन दोनों की जिम्मेदारी है कि वे अपनी प्रतिद्वंद्विता को इस प्रकार संभालें कि टकराव और संघर्ष से बचा जा सके। यही विवेक, यही संतुलन, और यही धैर्य — भारत की असली रणनीतिक शक्ति है।

अंत में, हिंद–प्रशांत की कहानी अभी अधूरी है। यह क्षेत्र आने वाले दशकों में वैश्विक शक्ति–संरचना को आकार देगा। भारत की भूमिका उस कहानी में निर्णायक होगी— बशर्ते वह अपनी सैन्य क्षमताओं, कूटनीतिक सक्रियता और आर्थिक शक्ति का समन्वय जारी रखे।

संदर्भ

1. Aryal SK, Nair A. Division in Indo-Pacific strategy: An assessment of the Indo-Pacific strategies of India, Japan, the USA, and Australia. East Asia,2025:42:157–178. https://doi.org/10.1007/s12140-024-09477-3
2. Banik SK. India's counter strategic response to China's 'String of Pearls' in the Indian Ocean: An analysis from the Belt and Road Initiative (BRI) perspectives. Social Science Review (The Dhaka University Studies, Part-D),2025:42(2):138–157. https://doi.org/10.3329/ssr.v42i2.88634
3. Chauhan P. The Indian Navy in the changing geopolitics of the Indo-Pacific. National Maritime Foundation,2023. www.maritimeindia.org (Hindi version published in Defence Monitor, September 2023).
4. Chauhan P, Agnihotri KK, editors. Maritime Perspectives 2024: Eastern segment of the Indo-Pacific: Maritime power-play. National Maritime Foundation,2024. ISBN: 978-81-979983-9-3.
5. Eisentraut S, Gaens B. The US-Japan-India-Australia Quadrilateral Security Dialogue: Indo-Pacific alignment or foam in the ocean. FIIA Briefing Paper No. 239. Finnish Institute of International Affairs,2018. ISBN: 978-951-769-568-8.
6. Gopal P. India and collective defense in the Indo-Pacific: Possibilities, perspectives and challenges [इंडो–पैसिफिक में भारत और सामूहिक रक्षा]. Strategic Studies Quarterly,2024.
7. Kasanova E. India and China's strategies in the Indo-Pacific region [इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में भारत और चीन की रणनीतियाँ]. Journal of Asian Security and International Affairs,2024:11(1):45–68.
8. Koga K. ASEAN's institutional strategic partnerships in the Indo-Pacific. Journal of Current Southeast Asian Affairs,2026:1–33. https://doi.org/10.1177/18681034261437415
9. Rozman G. Strategic triangles reshaping international relations in East Asia [पूर्वी एशिया में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को पुनः आकार देने वाले रणनीतिक त्रिकोण]. The Pacific Review,2022:35(4):652–671. https://doi.org/10.1080/09512748.2022.2035987
10. Saeed MA, Javed U. India's naval expansion in the Indian Ocean and strategic implications for Pakistan. Pakistan Horizon,2020:73(1–2):67–88.

11. Singh TP, Singh LJ, Singh NK. India and QUAD in the Indo-Pacific region: A perspective on maritime security. Journal of National Security,2025:28(2). https://doi.org/10.1177/09735984251342231
12. Tertia J, Perwita AAB. Maritime security in Indo-Pacific: Issues, challenges and prospects. JIHI – Journal of International and Humanitarian Issues,14(1):77–95. http://dx.doi.org/10.26593/jihi.v14i1.2795.77-95
13. Verma R. India–China rivalry, border dispute, border standoffs, and crises. India Review,2024:23(5):397–408. https://doi.org/10.1080/14736489.2024.2423996
14. Chong W. Indo-Pacific strategy comeback: An assessment. Australian Journal of International Affairs,2019:73(5):445–463. https://doi.org/10.1080/10357718.2019.1633817